आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2015-17

प्रसार शिक्षा निदेशालय
राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय
बीकानेर

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 4 अंक : 8 अप्रैल, 2017 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

परिकल्पना एवं निर्देशन : कुलपति प्रो. (डॉ.) कर्नल ए.के. गहलोत

dyifr lUn'k

ik- ¼Mk-½ duy ,- d- xgykr

राज्य में पशुओं की आधुनिक और उन्नत पशुचिकित्सा सेवाओं का होगा विस्तार

प्रिय, किसान–पशुपालक भाईयों और बहनों!

माननीय मुख्यमंत्री और वित्त मंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे ने अभी हाल ही में प्रस्तुत राज्य बजट में पशुओं के लिए उन्नत और आधुनिक चिकित्सा सेवाओं के विस्तार की घोषणा की है। इससे पशुपालन जगत में हर्ष की लहर व्याप्त है। माननीय मुख्यमंत्री ने अपनी बजट घोषणा में इस बात का खास उल्लेख किया हैं कि राजस्थान के बीकानेर में राजस्थान पशुचिकित्सा एव पशु विज्ञान विश्वविद्यालय स्थित है, जहां पशुओं के स्वास्थ्य के लिए उच्च स्तरीय हॉस्पीटल और रिसर्च सेन्टर स्थित हैं। इसका लाभ प्रदेश के पशुपालकों को देने के लिए सभी सात संभागीय मुख्यालयों पर स्थित राजकीय बहुद्देश्यीय पशु चिकित्सालयों को ''टेलि–मेडिसिन'' के माध्यम से जोड़ा जाएगा। इस घोषणा से वेटरनरी विश्वविद्यालय की उच्च प्रौद्योगिकी और उन्नत तकनीकी सेवाओं की रोग निदान, पशु उपचार की विशेषज्ञ सेवा राज्य के पशुचिकित्सकों और आम पशुपालकों को सीधे तौर पर मिल सकेगी। पशुधन के बेहतर स्वास्थ्य और प्रभावी उपचार के लिए विश्वविद्यालय के बीकानेर, जयपुर और वल्लभनगर (उदयपुर) संघटक महाविद्यालयों में पशुचिकित्सा नैदानिक कॉम्प्लेक्स (पशु चिकित्सा अस्पताल) स्थापित हैं। इसके साथ ही महाविद्यालय के विभिन्न विभागों में पशु मादा रोग, बड़े–छोटे पशुओं के रोग उपचार, शल्य चिकित्सा, सोनोग्राफी, रेडियोग्राफी, कृत्रिम गर्भाधान जैसी सुविधाएं उपलब्ध हैं। इन सेवाओं का उपयोग पशुचिकित्सा विद्यार्थियों, प्रशिक्षु पशुचिकित्सकों, पशुधन सहायकों और पशुपालकों के लिए प्रशिक्षण और 'शोध के लिए भी किया जाता है। टी.वी.सी.सी में चौबीसों घण्टें उपचार सेवाएं सुलभ हैं। सभी टी.वी.सी.सी. में पशुचिकित्सा एवं विकिरण विभाग, पशु औषध विभाग, पशु मादा रोग एवं प्रसूति विभाग के साथ ही परजीवी विज्ञान, सूक्ष्म जीव विज्ञान, पेथोलॉजी तथा जैव रसायन विभाग की विशेषज्ञ सेवाएं संचालित होती है। विश्वविद्यालय द्वारा पशुओं की सीटी स्केन, अल्ट्रासोनोग्राफी, एन्डॉस्कोपी, ब्लड बैंक, लेजर से शल्यक्रिया के साथ छोटे–बड़े पशुओं के पृथक ऑपरेशन थिएटर, सीसीयू, हीट स्ट्रोक वार्ड की सेवाएं सुलभ करवाई गई हैं। मुख्यमंत्री की बजट घोषणा से पूरे राज्य के पशुपालकों को अपने पशुधन की बेहतरी के लिए उन्नत और आधुनिक पशुचिकित्सा सेवाओं का लाभ मिलना शुरू हो सकेगा।

(प्रो. ए. के. गहलोत)

e[; lekpkj

कृषकों द्वारा खेतों में किए नवाचार व अनुसंधान पर पहली बार हुआ राष्ट्रीय मंथन

राज्य में अपनी किस्म का पहला देश के ख्यातनाम कृषक वैज्ञानिकों के साथ राज्य के कृषक–पशुपालकों और वैज्ञानिकों का दो दिवसीय राष्ट्रीय मंथन कार्यक्रम 10 मार्च को वेटरनरी विश्वविद्यालय में सम्पन्न हो गया। कार्यक्रम में खेती–बाड़ी में नवाचार करने वाले देश के उत्तरी प्रांतों के 25 कृषक वैज्ञानिकों के साथ राज्य के 150 प्रगतिशील किसान और कृषि और पशुचिकित्सा वैज्ञानिक ने भाग लिया। उद्घाटन सत्र में अतिथियों ने आयोजन को राजुवास की एक ऐतिहासिक पहल बताते हुए कृषि में पारंपरिक ज्ञान और विज्ञान का एक अद्भुत सम्मेलन बताया। देश के किसान वैज्ञानिकों ने न्यून शैक्षणिक स्तर के बावजूद खेतों में अपनी जरूरतों और प्रयोगों के आधार पर खेती–बाड़ी में नवाचार और मशीनरी को अनुकूल बनाकर उल्लेखनीय कार्य किया है जिसे व्यावसयिक तौर पर अपनाकर आम लोगों तक पहुँचाने की जरूरत बताई गई, इसके लिये ''दक्ष किसान संगठन'' बनाए जाने का निर्णय हुआ। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने स्वागत भाषण किया। समारोह के उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि पूर्व सिंचाई मंत्री श्री देवीसिंह भाटी, अध्यक्ष पर्यावरणविद् पद्मश्री श्री अनिल प्रकाश जोशी, विशिष्ट अतिथि वरिष्ठ पत्रकार श्री यशवंत व्यास, विश्लेषक–स्तंभ लेखक व पत्रकार श्री श्याम आचार्य थे। विशिष्ट अतिथि स्वामी केशवानंद कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. छीपा और महाराज गंगासिंह विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. भागीरथ सिंह थे। आमंत्रित अतिथि किसान आयोग के उपसचिव श्री योगेश वर्मा रहे। अतिथियों ने डॉ. महेन्द्र मधुप द्वारा लिखित 'खेतों के वैज्ञानिक' पुस्तक और प्रसार शिक्षा निदेशालय की मासिक पत्रिका "पशुपालन नये आयाम" के नवीनतम अंक का विमोचन किया। समारोह में अतिथियों ने 25 कृषक वैज्ञानिकों को शॉल, श्रीफल और स्मृतिचिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया।

101 पशुपालकों का वैज्ञानिक पशुपालन एवं पोषण पर प्रशिक्षण सम्पन्न

लूणकरनसर तहसील के 43 पशुपालकों ने वेटरनरी विश्वविद्यालय में दो दिवसीय प्रशिक्षण शिविर में भाग लेकर उन्नत पशु पोषण की विभिन्न तकनीकों और महाविद्यालय की विभिन्न इकाइयों का भ्रमण कर वैज्ञानिक पशुपालन और पशुचिकित्सा के उपचार कार्यों की जानकारी ली। 25 मार्च को शिविर का समापन हो गया। पशुधन संसाधन, प्रबंधन एवं तकनीकी केन्द्र के प्रमुख अन्वेषक एवं प्रशिक्षण के प्रभारी प्रो. आर.के. धूड़िया ने प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण पत्र प्रदान किए। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि पशुपालन में पशु पोषण पर 70 प्रतिशत राशि व्यय की जाती है। पशुपालक वैज्ञानिक रीति–नीति से पशुपालन करके पशुधन से अधिकतम उत्पादन लिया जा सकता है। पोल्ट्री फार्म में मुर्गीपालन में विविधिकरण से आय अर्जित करने, डेयरी फार्म में देशी गौवंश के रखरखाव से अधिकतम दूध उत्पादन कार्यों की जानकारी ली। उन्होंने पशुओं को निरोगी रखने तथा उनकी उपचार सेवाओं के लिए वेटरनरी कॉलेज क्लिनिक्स का भ्रमण कर अत्याधुनिक पशुचिकित्सा सेवाओं का अवलोकन किया। पशुपालकों ने पशु पोषण के साथ ही हरा चारा उत्पादन की विभिन्न तकनीकों के प्रायोगिक कार्यों को देखा। पशुपालकों ने प्रशिक्षण कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के तकनीकी म्यूजियम का अवलोकन किया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर की चतुर्थ वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक सम्पन्न

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर की चतुर्थ वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक दिनांक 17 मार्च, 2017 को पंचायत समिति, नोहर के सभागार में कुलपति, प्रो.(डॉ.) कर्नल ए.के. गहलोत की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। प्रो. गहलोत ने कहा कि केन्द्र के माध्यम से क्षेत्र के कृषक पशुपालकों को नवीनतम तकनीकी का लाभ मिल सके इसके लिए उच्च स्तर पर प्रयास जारी है एवं साथ ही जरूरत है कि सम्बन्धित विभागों की विभिन्न योजनाओं की जानकारी का भी सीधा लाभ कृषक पशुपालकों तक पहुंचे। उन्होनें विश्वविद्यालय के रेडिया कार्यक्रम ''धीणे री बात्यां'' मासिक पत्रिका पशुपालन नए आयाम एवं टोक फ्री हेल्प लाईन नम्बर 18001806224 के माध्यम से विश्वविद्यालय से जुड़ने पर जोर दिया कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री अमरसिंह पूनियां, प्रधान पंचायत समिति, नोहर ने केन्द्र द्वारा पशुपालन में अजोला एवं साईलेज तकनीक के प्रसार सम्बन्धित किये जा रहे प्रयासों की प्रशंसा की। निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास एवं कार्यक्रम समन्वयक कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर प्रो. आर.के. धूड़िया ने केन्द्र की वर्ष 2016–17 की वार्षिक प्रतिवेदन एवं वर्ष 2017–18 की कार्य योजना प्रस्तुत की।ं विशिष्ट अतिथि श्री भानीराम, उपखण्ड अधिकारी, नोहर नक केन्द्र के प्रयासों की सराहना की। श्री अक्षय घिंटाला एवं डॉ. नवीन सैनी ने अपने विषय

सम्बन्धित प्रतिवेदन एवं कार्य योजना को विस्तार से प्रस्तुत किया। बैठक में संयुक्त निदेशक, पशुपालन विभाग, हनुमानगढ़, सहायक निदेशक (कृषि विस्तार), कृषि विज्ञान केन्द्र, संगरिया के डॉ. अनूप कुमार सहित 48 सदस्यों ने भाग लिया। कार्यक्रम के दौरान केन्द्र की दो पुस्तिका ग्वार की उन्नत खेती एवं मधुमक्खी पालन–एक लाभकारी व्यवसाय का विमोचन उपस्थित अतिथियों द्वारा किया गया।

डॉग शो में दुनिया की 23 श्वान नस्लों का प्रदर्शन

दुनिया भर में पाई जाने वाली 23 श्वानों की प्रजातियों के जलवे का 20वां डॉग शो 4 मार्च को वेटरनरी विश्वविद्यालय में सम्पन्न हो गया। अर्द्धसैनिक बलों के प्रशिक्षित श्वानों के विभिन्न करतबों और हूनर तथा विभिन्न वेशभूषा में श्वानों को देखकर लोग रोमांचित हुए। समारोह की मुख्य अतिथि राजुवास की प्रथम महिला श्रीमती अरूणा गहलोत और कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने शांति के प्रतीक धवल कपोतों को मुक्ताकाश में छोड़कर डॉग शो का शुभारंभ किया। वेटरनरी कॉलेज और केनाइन वेलफेयर सोसाईटी द्वारा आयोजित इस वार्षिक समारोह में 57 श्वान पालकों सहित सैकड़ों लोगों ने अपनी उपस्थिति दर्ज की, जिसमें सबसे छोटी प्रजाति का मेक्सिकन "चिहुआहुआ", सबसे बड़ा ग्रेटडेन और भारी भरकम सैन्ट बर्नार्ड प्रजाति के श्वान प्रमुख आकर्षक बने रहे। डॉग शो में रोडेशियन प्रजाति का दुर्लभ श्वान और बेल्जियम शैफर्ड की चुश्ती और चालाकी के कारनामों से श्वान पालक रूबरू हुए। उद्घाटन सत्र के विशिष्ट अतिथि महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. भागीरथ सिंह थे। समारोह के प्रारंभ में डॉग–शो आयोजन समिति के अध्यक्ष प्रो. जे.एस. महेता और आयोजन सचिव डॉ. दीपिका धूड़िया ने अतिथियों का स्वागत किया। समारोह में विश्वविद्यालय के कुलसचिव श्री बी.आर. मीणा, वित्त नियंत्रक श्री अरविंद बिश्नोई वेटरनरी कॉलेज के अधिष्ठाता प्रो. जी.एस. मनोहर मेडिसिन विभागाध्यक्ष प्रो. दिनेश बिहानी व केनाइन वेलफेयर सोसाइटी के सचिव प्रो. अनिल आहुजा सहित डीन–डायरेक्टर भी मौजूद थे। डॉग शो के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

i'kikyd if'k{k.k lekpkj

वीयूटीआरसी चूरू द्वारा पशुपालक प्रशिक्षण शिविर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, चूरू द्वारा 4, 7 एवं 15 मार्च को गांव छोटडिया, बंदनाऊ एवं करणपुरा गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 107 पशुपालकों ने भाग लिया।

सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण आयोजित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) द्वारा 6, 15, 18 एवं 20 मार्च को गांव सरदारपुरा खरता, बुदरवाली, मटीलीराठान एवं गुरूसर मोडियां में पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 103 पशुपालकों ने भाग लिया।

सिरोही केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सिरोही द्वारा 16,18 एवं 23 मार्च को गांव कैलाशनगर, कुजरा एवं दताणी गांवो में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 82 पशुपालकों ने भाग लिया।

बाकलिया (नागौर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बाकलिया–लाड़नू द्वारा 6, 7, 8 एवं 20 मार्च को गांव सुरपालिया, झाडेली, मुडीयाऊ एवं दुजार तथा 3 एवं 20 मार्च को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 146 पशुपालकों ने भाग लिया।

अजमेर केन्द्र द्वारा 5 गांवों में प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, अजमेर द्वारा 5, 6, 7, 16 एवं 17 मार्च को गांव नाडी, उंटडा, भवानीखेडा, लाडपुरा एवं उतमी गांवो में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 177 पशुपालकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, डूंगरपुर द्वारा 229 पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा 14, 16, 18, 22 एवं 24 मार्च को गांव लाटीया, ढाणी खजूर, लाम्बाभाटडा, आमजारा एवं कतीसोर गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों के आयोजन में कुल 229 पशुपालकों ने भाग लिया।

कुम्हेर (भरतपुर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण आयोजित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा 3, 4, 5, 6, 7 एवं 8 मार्च को गांव नंगला मेथना, मानोता बाजाहेरा, राईसीस, जायेली थमान, नंगला बांध, डिडवारी अस्तावन, हिंगोली एवं पपरेरा गांवो में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण,गोष्ठिया एवं प्रदर्शन शिविरों के आयोजन में 95 पशुपालकों ने भाग लिया।

टोंक जिले में 316 पशुपालकों का प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, टोंक द्वारा 2, 3, 4, 6, 7, 8, 14, 15, 16 एवं 17 मार्च को गांव सोहेला, मोटुका, बरोनी, जुनला, बिछपुरी, रूस्तमगंज, घास, अरनिया नील, छाण एवं भरनी गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 316 पशुपालकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, कोटा द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कोटा द्वारा 2, 4, 7, 8, 14, 15, 16 एवं 17 मार्च को गांव देवली माछियान, खेड़ा रसूलपुर, चंडीदा, भोजपुरा, किसनपुरा तकिया, गावडी, गंगाईचा एवं रंगपुर गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 247 पशुपालकों ने भाग लिया।

बोजुन्दा (चितौड़गढ़) केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बोजुन्दा (चितौड़गढ) द्वारा 7,15,16,17 एवं 18 मार्च को गांव निकुम, पुनावली, भाणुजा, पिण्ड एवं कचुमरा गांवों में तथा 14 एवं 20 मार्च को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 254 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, धौलपुर द्वारा 285 पशुपालकों का प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 3, 6, 16, 18, 21, 22 एवं 23 मार्च को गांव बरई, हेदलपुर, बिजोली, मांगरोल, धर्मपुर, भोजपुर एवं बरई–बारी गांवों मेंएक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों के आयोजन में 285 पशुपालकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर द्वारा गोष्ठी एवं प्रशिक्षण शिविर

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़) द्वारा 7 मार्च को गांव मलवानी तथा 6 मार्च को कृषि विज्ञान केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों के आयोजन में 75 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु आपदा प्रबंधन पर पेमासर में शिविर का आयोजन

वेटरनरी विश्वविद्यालय के पशु आपदा प्रबंधन तकनीकी केन्द्र द्वारा बीकानेर तहसील के गांव पेमासर में पशु आपदा प्रबंधन पर एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का 18 मार्च को आयोजन किया गया। शिविर में केन्द्र के टीचिंग एसोसिएट डॉ. सोहेल मोहम्मद व डॉ. सतवीर कुमार ने पशु आपदा प्रबंधन केन्द्र द्वारा विकसित तकनीकों, पशु रोगों एवं उनके उपचार व रोकथाम विषय पर सचित्र व्याख्यान दिये। इस प्रशिक्षण शिविर में श्री श्रीगोपाल उपाध्याय (सदस्य अनुसंधान परिषद्) का सहयोग रहा। 60 पशुपालकों ने इस प्रशिक्षण शिविर में भाग लिया।

फसल कटाई के समय भेड़-बकरियों में फड़किया रोग की संभावना एवं प्रबंधन

सामान्यतः यह माना जाता है कि भेड़–बकरियों में फड़किया रोग वर्षा ऋतु में ज्यादा होता है। कुछ हद तक यह बात सही भी है क्योंकि चारे की ज्यादा मात्रा खाने से पशु इस रोग से ग्रसित होते है और वर्षाकाल में चारा बहुतायत में उपलब्ध होता है, इसलिए ऐसा माना जाता है। लेकिन किसी भी मौसम में अत्यधिक मात्रा में चारा खाने से फड़किया रोग की संभावना रहती है। मार्च–अप्रेल का महीना फसल कटाई का समय होता है। फसल काटते समय काफी अधिक मात्रा में चारा खेतों में गिरता हैं साथ ही अन्न – दलहन इत्यादि भी खेतों में गिर जाते है। फसल कटाई के बाद ऐसें खेतों में भेड – बकरिया चरते समय अत्याधिक मात्रा में चारा खा लेती है और इस रोग की शिकार हो जाती है। ज्यादा चारा खाने से आंतो का हिलना डुलना कम हो जाता है और पशु के पेट में पहले से उपस्थित क्लॉस्ट्रीडियम वेल्चाई नामक जीवाणु कई प्रकार के जहर बनाने लगते हैं। यह जहर का मिश्रण शरीर में अवशोषित होकर इस बीमारी के लक्षण पैदा करता हैं। इस रोग के मुख्य लक्षण हैः– चरना–पिरना बंद कर देना, बीमार पशु का रेवड़ के साथ चलते समय पीछे रह जाना, पेट में दर्द होना जिससे पशु का पेट में लात मारना, बार – बार उछलना, जमीन पर लेटकर लोट–पोट होना, जीभ बाहर निकालकर श्वांस लेना, दांतों को पीसना, आफरा इत्यादि। पशु को दस्त हो जाते हैं जिसमे कभी–कभी खून भी आ सकता है। पशु खड़ा होने में असमर्थ हो जाता है तथा जमीन पर लेटकर अपनी टाँगे फैला लेता है। जहर का केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र पर असर डालने से विभिन्न लक्षण जैसे कि उत्तेजना एंव अकडन आदि प्रकट होते है। इस बीमारी में सामान्यतया पशु की कुछ मिनट से लेकर कुछ घंटों में मृत्यु हो जाती है। इस रोग का कोई समुचित उपाय नहीं है इसलिए इससे बचाव के लिये मुख्यतः टीकाकरण एवं प्रबंधन महत्वपूर्ण है।

प्रबंधन–

- ❖ पशु को हमेशा संतुलित एवं नियंत्रित मात्रा में आहार देना चाहिये।
- ❖ फसल कटाई के बाद पशुओं को सीमित समय के लिये ही खेतों में चरने देना चाहियें ताकि पशु अत्यधिक चारा–अन्न न खा पाये।
- ❖ मार्च–अप्रेल में सभी स्वस्थ पशुओं को फड़किया रोग का टीका लगवाना अत्यन्त आवश्यक है।
- ❖ साल में छः महीने के अन्तराल पर दो बार टीकाकरण पशु को रोग से पूर्णतया बचाता हैं।

किसी भी पशु में बीमारी के लक्षण प्रकट होने पर निकटतम पशुचिकित्सक से तुरंत संपर्क करें।

– प्रो. ए. के. कटारिया
प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर, राजुवास (मो. 9460073909)

पशुओं में रोगों की रोकथाम के सामान्य उपाय

पशुओं के बीमार होने पर उनकी उचित चिकित्सा व देखभाल की जानी चाहिए। पशुपालकों को हमेशा ध्यान रखना चाहिए कि उसका पशु स्वस्थ रहे। "उपचार से रोकथाम बेहतर" यह पशु चिकित्सा का ब्रहम वाक्य होना चाहिए। अतः पशुओं में संक्रामक रोगों की रोकथाम हेतु आवश्यक उपाय किये जाने चाहिए। इससे पशुओं को शारीरिक पीडा और पशुपालकों को आर्थिक नुकसान से भी बचाया जा सकता है। इसके लिए पशु पालक को पशुओं को नियमित रूप से कृमिनाशक (पेट के कीडे. मारने वाली) दवांए एवं सही समय पर टीकाकरण करवाना चाहिए। इससे पशु स्वस्थ रहेगा और उत्पादन की निरन्तरता बनी रहेगी।

❖ **पशु के रखने के स्थान की (पशु आवास) की स्वच्छता बनाये रखना:**– पशुपालक को हमेशा ध्यान में रखना चाहिए कि जहां पर पशु को बांधा जाता है वो स्थान साफ– सुथरा व सूखा होना चाहिए। पशुओं के बाडे. में जितनी साफ–सफाई होगी पशु के बीमार होने का संम्भावना उतनी ही कम होगी। पशु आवास में विभिन्न आयु वर्ग के पशुओं को अलग– अलग रखना चाहिए।

➢ पशु बाडे. में मल– मूत्र की सफाई भी नियमित रूप से होनी चाहिए और मल– मूत्र का संग्रहण एवं निस्तारण भी बाडे. से दूर करना चाहिए। हमेशा ध्यान रखना चाहिए की मल– मूत्र, पशुओं की खाद्य सामग्री व पानी के सम्पर्क में ना आये।

➢ बाटें (दाना मिक्षण) व पानी पीने के बर्तनों को नियमित रूप से पानी से धोना चाहिए तथा पीने के स्वस्थ जल की व्यवस्था होनी चाहिए। पीने के जल में नियमित रूप से पोटेशियम परमैंगनेट (लाल दवा) मिलाना चाहिए।

➢ पशुओं को खनिज लवण व विटामिन पूरक युक्त संतुलित आहार दिया जाना चाहिए।

❖ **पशुओं को नियमित रूप से कृमिनाशक दवाई देना:**– पशुओं को विभिन्न प्रकार के परजीवीजनित रोगों से बचाने हेतु नियमित रूप से कृमिनाशक दवाई देनी चाहिए।

➢ कृमिनाशक दवाई सामान्यतः सवेरे भूखे पेट दी जानी चाहिए तथा दवा देने के 2–3 घण्टे तक पशु को कुछ भी आहार नहीं देना चाहिए।

➢ कृमिनाशक दवा खिलाते अथवा पिलाते समय, पशु की जीभ नहीं पकडे.। यदि जीभ को पकड़कर दवाई पिलायेंगे तो दवा की पेट में जाने की बजाय सांस की नली में जाने की सम्भावना रहती है। यदि पशु को दवा खिलाते या पिलाते समय खांसी आये तो दवा तुरन्त रोक देना चाहिए।

➢ पशुपालक को कृमिनाशक दवाई का चयन पशुचिकित्सक के परामर्श से करना चाहिए।

➢ पशुओं में अन्तःकृमिओं के निदान हेतु नियमित रूप से गोबर की जांच करवाना चाहिए तथा जांच के परिणाम के अनुसार पशुचिकित्सक की सलाह से कृमिनाशक दवाई देनी चाहिए।

➢ कृमिनाशक दवाई की समुचित मात्रा दी जानी चाहिए क्योंकि दवा की मात्रा कम हुई तो दवा सही तरीके से काम नहीं कर पाएगी। इसके अलावा दवाई की अधिक मात्रा भी पशु के लिए हानिकारक हो सकती है।

➢ नवजात बछड़ों को जन्म के दस दिन के पश्चात कृमिनाशक दवाई दी जानी चाहिए। उसके पश्चात तीन माह की उम्र पर यह दवा दी जानी चाहिए। वयस्क पशुओं को कम से कम वर्ष में दो बार विशेष रूप से वर्षा ऋतु से पूर्व एवं इसके पश्चात कृमिनाशक दवा दी जानी चाहिए।

❖ **पशुओं का बाह्य परजीवों से बचाव (जूंऐ, मक्खी, मच्छर, चींचड़):**– गौशाला, बाड़ा जहां पशुओं को बांधा जाता है वहां साफ सफाई होनी चाहिए क्योंकि गन्दे स्थानों पर ही कीडे. अण्डे देते हैं और संक्रमण का खतरा बढ. जाता है। इसके लिए नियमित रूप से बाह्य परजीवी दवाई का प्रयोग करते रहना चाहिए। बाह्य परजीवी दवा का प्रयोग करते समय सावधानी रखनी चाहिए कि पशु इन दवाईयों को चाट ना लें, क्योंकि ऐसा करने पर पशु में विशाक्तता भी हो सकती है। पशुओं में जितना महत्वपूर्ण पेट के कृमिओं का नाश करना है उतना ही बाह्य परजीवीओं को नष्ट करना जरूरी है। बाह्य परजीवीओं को नष्ट करने हेतु पशुओं को पशुचिकित्सक की सलाह अनुसार साइपरमेंथ्रीन, डेन्टामेंथ्रीन, फलुमेंथ्रीन अमिटराज, आदि कीटनाशक का प्रयोग सावधानी पूर्वक किया जा सकता है।

❖ **पशुओं की संक्रामक व छूत की बीमारी से रोकथाम हेतु नियमित टीकाकरण:**– पशुओं में संक्रामक रोग होने पर पशु अस्वस्थ होता हैं और पशु की अकाल मृत्यु भी हो सकती हैं। संक्रामक रोग मुख्यतः जीवाणु, विषाणु, प्रोटोजोआ आदि से फैलते हैं। पशुओं में संक्रामक रोग फैलने पर यह बहुत बडे. क्षेत्र के पशुओं को अपनी चपेट में ले सकते हैं।

➢ इस तरह की बीमारियों से पशुओं को बचाने के लिए पशु को उचित उम्र में टीकाकरण करवाना चाहिए।

➢ किसी भी दो भिन्न प्रकार के टीकाकरण के मध्य कम से कम 15 दिनों का अन्तर रखना चाहिए।

➢ रोग ग्रस्त पशुओं में किसी भी तरह का टीकाकरण नहीं करवाया जाना चाहिए।

➢ संक्रामक बीमारी फैलाने पर पशुआवास को निःसंक्रमित किया जाना चाहिए।

➢ संक्रामक रोग होने पर पशुओं को खुले स्थानों पर चरने के लिए नहीं भेजना चाहिए।

➢ संक्रामक रोग से रोगग्रस्त पशु की मृत्यु हो जाने पर पशु का उचित निस्तारण किया जाना चाहिए।

➢ संक्रामक रोग से मरने वाले पशु के साथ ही उसके अपशिष्ट पदार्थों का उचित निस्तारण कर देना चाहिए ताकि स्वस्थ पशुओं में यह रोग फैलने से रोका जा सके।

➢ रोगी पशु को तब तक अलग ही रखना चाहिए जब तक की वो पूरी तरह से स्वस्थ ना हो जाये।

➢ पशुपालक को जैसे ही पता चले कि उसका पशु अस्वस्थ है तो बिना समय खराब किये तुरन्त नजदीकी पशु चिकित्सक से सम्पर्क करें और समय पर उचित उपचार करवायें।

इस प्रकार इन बातों का ध्यान रखकर पशुपालक अपने पशुओं को रोग ग्रस्त होने से बचा सकते हैं।

डॉ. संध्या मोरवाल, डॉ. शिव कुमार शर्मा,
वेटनरी महाविद्यालय,नवानियां, उदयपुर

अपने विश्वविद्यालय को जानें — पशु आपदा प्रबंधन एवं तकनीकी केन्द्र

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर स्थित पशु आपदा प्रबंधन केन्द्र की स्थापना सन् 2013 में राजस्थान सरकार द्वारा की गई जिसका उद्देश्य आपदाओं से प्रभावित पशुधन के लिए रणनीतियां एवं सगोंष्ठियां कार्यशालाएं एवं पशुपालकों के प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन करना है। अब तक यह केन्द्र एक नेशनल सेमीनार, दो राष्ट्रीय स्तर पर कार्यशाला एवं 25 प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन कर चुका है। केन्द्र द्वारा वर्ष 2015 में एक लघु फिल्म का भी निर्माण किया गया जिसको द्वितीय सेन्ड्यून फिल्म फेस्टिवल में द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। केन्द्र में गाय व भैंसों के लिए दो वातानुकूलित वार्ड भी बनाये गए है जिनमें गर्मियों में तापघात से पीड़ित पशुओं व आग से जले हुए पशुओं को उपचार के दोरान रखा जाता है। केन्द्र द्वारा विकसित तकनीकों में फायर सेफ्टि हट का निर्माण किया गया है जिसके द्वारा पशुपालकों को पशुओं के बाड़े में दुर्घटनावश आग लग जाये तो जानवरों को कैसे बचाया जा सकता है इसे प्रदर्शित किया गया है। समय–समय पर इस केन्द्र के वैज्ञानिक दुर्घटना या आपदा से प्रभावित पशु–पक्षियों की चिकित्सा व पुर्नवास का कार्य भी करते रहे है वर्ष 2015 में राजुवास के कोड़मदेसर में चक्रवात से प्रभावित गायों के उपचार में इस केन्द्र की महत्वपूर्ण भूमिका रही थी। इस प्रकार वर्ष 2015 व 2016 में तीन अलग अलग आगजनी की दुर्घटना में जली हुई गायों व भैंसों का मौके पर पहुंच कर उपचार किया एवं उसके बाद उन्हें केन्द्र के वातानुकूलित वार्ड में भर्ती रख कर इलाज किया गया। वर्ष 2016 में ओलावृष्टि में घायल 30 मोरों व 25 कबूतरों का मौके पर पहुंच कर बीकानेर जन्तुआल्य की टीक के साथ उपचार किया व उन्हे बीकानेर जन्तुआलय में स्थानांतरित करवाया गया। गत वर्ष इस केन्द्र ने भारतीय कृषि अनुसंधान केन्द्र द्वारा प्रायोजित 6 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया था।

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–अप्रैल, 2017

i'k jkx	i'k@i{kh idkj	{k=
egidk ,o [kjidk jkx	xk;] Hk I] cdjh] HkM	Hkjrij] nkIk] ckIokMk] Jhxxkuxj] p:] t;ij] >>u] Iokb&ek/kkij] /kkyij] fpRrkMx<] ukxkj] vyoj] guekux<] Ihdj] vtej] chdkuj] ckMej] tkykj
ih-ih-vkj- jkx	HkM] cdjh	Iokb&ek/kkij] t;ij] Jhxxkuxj] chdkuj] mn;ij] ukxkj] vtej] Ihdj] dkVk] tkykj] HkhyokMk
ppd ¼ekrk½ jkx	xk;] cdjh] HkM] ÅV	t;ij] Jhxxkuxj] tkykj] chdkuj] guekux<] >>u
xy?kkV jkx	xk;] HkI	vyoj] /kkyij] t;ij] Iokb&ek/kkij] cnh] vtej] nkIk] jktIeUn] >>u] ckjk] Ihdj] ikyh] guekux<
Blik jkx	xk;] HkI	tIyej] fpÙkkMx<] jktIeUn] chdkuj] >>u] guekux<] tkykj] Jhxxkuxj
QMfd;k jkx	HkM] cdjh	Iokb&ek/kkij] ckIokMk] t;ij] chdkuj] dkVk] ckjk] Jhxxkuxj] vyoj] ukxkj] /kkyij] Vkd] tk/kij
U;ekfud ik'pjYykfII	xk;] HkI] HkM] cdjh	vyoj] Vkd] Ihdj] chdkuj] guekux<] >>u
ckVfyTe	xk;	tIyej] ckMej] tk/kij] chdkuj
dVft;I dÁkbu ly;jkU;ekfu;k	HkM] cdjh	t;ij] >>u] Jhxxkuxj] ckjk
Lkjk ¼frcjIk½ jkx	HkI] ÅV] xk;	/kkyij] ukXkkj] ckIokMk] guekux<] Hkjrij
vUr% ijthoh& xky& Ñfe] i.k&Ñfe	xk;] HkI] HkM cdjh	Mxjij] cnh] /kkyij] Hkjrij] Ihdj] ckIokMk] dkVk] jktIeUn] guekux<] Jhxxkuxj
jkuh[kr jkx	efx;k	vtej] t;ij] Jhxxkuxj] chdkuj] vyoj] dkVk
bUQDIh;I ckdkbfVI	efx;k	vtej] t;ij] Jhxxkuxj] chdkuj] vyoj] dkVk

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें – प्रो. जी.एस. मनोहर, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, प्रो. ए.के. कटारिया, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर एवं प्रो. अन्जु चाहर, विभागाध्यक्ष, जनपादकीय रोग विज्ञान, एवं निवारक पशु औषध विज्ञान विभाग, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर। फोन– 0151–2204123, 2544243, 2201183

अपने स्वदेशी भेड़ वंश को पहचानें — जैसलमेरी भेड़ : गौरव प्रदेश का

यह राजस्थान के जैसलमेर, बाड़मेर व जोधपुर जिलों में मुख्यतया पाई जाती है। शुद्ध नस्ल दक्षिणी परिश्चमी जैसलमेर जिले में देखने का मिलतीहै। इस कारण इस नस्ल का नाम जैसलमेरी है। रायका व सिंधी मुस्लिम समुदाय प्रायः यह नस्ल पालता है। राजस्थान में पाई जाने वाली भेड़ की नस्लों में यह सबसे लम्बी व मजबूत कद काठी की होती है, जिसका चेहरा काला या गहरे भूरे रंगा का होता है जो कि गर्दन के निचले हिस्से तक फैला होता है। इसका नाक रोमन प्रकार की होती है व पूंछ मध्यम से बड़े आकार की होती है। कान लम्बे व लटके हुए होते है जिस पर उपास्थि अनुलग्नक होता है। नर व मादा दोनों में सींग नहीं पाए जाते है। इसकी ऊन सफेद होती है तथा अधिक घनी नही होती। मध्यम कालीन प्रकार की गुणवत्ता वाली होती है। लगभग डेढ़ साल की उम्र में प्रजनन आरम्भ कर देती है। जन्म दर लगभग 55–60 प्रतिशत होती है। प्रायः एक ही मेमने का जन्म एक बार में होता है। चयन का आधार ऊन उत्पादकता होता है। प्रजनन के लिए पशुपालक नर मेढ़े अपने ही झुण्ड से चुनता है और कभी कभार दूसरे पशुपालकों से अदला बदली भी कर लेता है। एक साल में तीन बार ऊन कतरी/काटी जाती है। एक बार में लगभग 700–800 ग्राम ऊन प्राप्त हो जाती है तथा रेशे की लम्बाई लगभग 6.5 सेमी होती है। वयस्क नर व मादा का शारीरिक भार क्रमशः 28–30 किलो होता है।

सफलता की कहानी — डेयरी व्यवसाय में सफलतम नाम-सीताराम

सूरतगढ़ (श्रीगगांनगर) के वार्ड नं 26 में शिवबाड़ी मंदिर के पास रहने वाले प्रगतिशील पशुपालक सीताराम पुत्र श्री हरजीराम ने कृषि के साथ – साथ पशुपालन को भी आय का साधन बनाया है। युवा एवं सजग सीताराम ने शुरू में केवल अपने घर की आवश्यकता के अनुसार पशुपालन को अपनाया परन्तु समय के साथ दूध की उपयोगिता एवं बाजार की जरूरत को ध्यान में रखते हुए पशुपालन को डेयरी व्यवसाय के रूप में शुरू किया । सीताराम के पास लगभग 26 बीधा जमीन है। परन्तु सीताराम का कहना है कि जितनी बचत उन्हें पशुपालन (डेयरी) से हो रही है उतनी कृषि से नहीं है। अब सीताराम के पास 34 गाय, 14 बछिया, 5 बछड़े व 3 भैंसे है जिनसे वह 300 लीटर दूध प्रतिदिन ले रहे हैं इस दूध को वे प्रतिदिन 8000 रूपये में बेच कर लगभग 5000 रूपये कि बचत प्रतिदिन कर रहे हैं। सीताराम ने अपने फार्म में दो शेड बनाये हैं उसके आलावा 50X75 फुट खुला स्थान रखा है जिसमे सुबह शाम पशुओं को रखा जाता है एवं 24 घण्टे साफ पानी का भी प्रबंध किया गया है। खुले स्थान में वैज्ञानिक तरीके से नांद (ठान) बनाये गये हैं जहां पशुओं को चारा एवं बांटा खिलाया जाता है। 10 बीघा क्षेत्र को पशु चारा उत्पादन के लिए आरक्षित रखा है। इसके अलावा पशुओं के घूमने–फिरने के लिए अलग से प्रबंध किया है। सीताराम समय समय पर पशुओं का टीकाकरण करवाता है जिससे पशुओं में किसी प्रकार कि बीमारी नही होती है। पशुओं को समय समय पर कृमिनाशी दवाई पिलाई जाती है। जिससे पशुओं के उत्पादन में भी वृद्धि होती है। वैज्ञानिक तरीके से पशुपोषण किया जाता है। सीताराम का कहना है की पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवम् अनुसन्धान केन्द्र, सूरतगढ से मिली नवीन तकनीकों का उपयोग कर पशु प्रबंधन कर रहे हैं तथा लगातार संपर्क में रहने तथा वैज्ञानिक जानकारी प्राप्त कर उसका उपयोग करने से बहुत लाभ हुआ है। सीताराम समय की जरूरत एवम् वी.यू.टी.आर.सी सूरतगढ़ से मिली नवीन तकनीक से अजोला उत्पादन, पशु चारा आचार (साइलेज) बनाना सीख कर तकनीक काम में ले रहे हैं। सीताराम डेयरी व्यवसाय को बढ़ाकर बहुत खुश है तथा नई नई तकनीकों की जानकारी प्राप्त कर के वह अपने डेयरी व्यवसाय को और आगे बढ़ाना चाहता है। इसके लिए वह केंन्द्र से निरन्तर प्रशिक्षण ले रहे है। (सम्पर्क–**सीताराम मो.8003455549**)

निदेशक की कलम से...

अधिक दूध उत्पादन के लिए आसान उपाय करें

प्रिय, पशुपालक एवं किसान भाईयों और बहनों!

गर्मी का मौसम शुरू हो गया है, पशुओं से अधिक दूध उत्पादन प्राप्त करने और स्वस्थ व बेहतर वृद्धि को बनाए रखने के लिए एक अच्छे प्रबंधन की आवश्यकता होती है। प्रबंधन के कुछ आसान और महत्वपूर्ण उपाय करके पशुपालक अपने दुधारू पशुओं से उचित मात्रा में दूध प्राप्त कर लाभ अर्जित कर सकते हैं। पोषण के उचित प्रबंधन के लिए ब्याहने के प्रथम तीन माह तक पर्याप्त ऊर्जा वाला आहार पशुओं को खिलाएं अन्यथा दूध उत्पादन कम होगा। स्वच्छ, ताजा व शीतल जल 24 घण्टे उपलब्ध करवाएं। अत्यधिक गर्मी में पशुओं को रेशेदार चारा कम खिलाएं क्योंकि ऐसा चारा अधिक उपापचयी गर्मी उत्पन्न करता है। गायों को दूध उत्पादन के अनुसार 2.5 किलो दूध उत्पादन पर 1 किलो बांटा एवं भैंसों को 2 किलो दूध उत्पादन पर 1 किलो बांटा खिलाएं। पशु आहार में प्रतिदिन 50 ग्राम खनिज लवण देना चाहिए। पशु का आवास स्वच्छ, आरामदायक और हानिकारक जीवाणु रहित होना चाहिए। गर्मी से बचाव के लिए विशेष प्रबंध करना न भूलें। दुधारू पशुओं को निश्चित समय अन्तराल पर पूर्ण रूप से दुहना चाहिए। अनुमानतः 15–16 लीटर से अधिक दूध देने वाले पशु को दिन में 2–3 बार दुहने से दुग्ध उत्पादन में 15 से 20 प्रतिशत की वृद्धि प्राप्त कर सकते हैं। थनों की थनैला बीमारी की जांच करते रहना चाहिए। दुधारू पशुओं का दूध सुखाने हेतु कम से कम 6–8 सप्ताह का विश्राम देना चाहिए। जिससे अगली ब्यांत के बाद अच्छा दूध उत्पादन हो सके। समय–समय पर अपने पशु की स्वास्थ्य जांच करें। पेट के कीड़े मारने की दवा, टीकाकरण व बीमारियों से बचने के उपाय करने से थनैला, गलघोंटू, जहरबाद, खुरपका–मुंहपका आदि बीमारियों से बचा जा सकता है। चमड़ी पर रहने वाले बाह्य परजीवियों जूं, चिंचड़ आदि के लिए कीटनाशक घोल को सही मात्रा में पशु के शरीर पर छिडकें। पशु की प्रजनन क्रियाओं जैसे कि ताव में आना, दो ब्यांत का अंतराल, जर का गिरना आदि का निरीक्षण करते रहना चाहिए इन उपायों से दूध देने की क्षमता को बढ़ाया जा सकता है। **–प्रो. आर.के.धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर मो : 9414283388**

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारित ''धीणे री बात्यां'' कार्यक्रम

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी चैनलों से प्रत्येक गुरूवार को प्रसारित **''धीणे री बात्यां''** के अन्तर्गत **अप्रैल 2017** में वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के वैज्ञानिकगण अपनी वार्ताएं प्रस्तुत करेंगे। राजकीय प्रसारण होने के कारण कभी कभी गुरूवार के स्थान पर इन वार्ताओं का प्रसारण अन्य उपलब्ध समय पर भी किया जा सकता है। पशुपालक भाईयों से निवेदन है कि प्रत्येक गुरूवार को प्रदेश के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों के मीडियम वेव पर सायं 5:30 से 6:00 बजे तक इन वार्ताओं को सुनकर पशुपालन में लाभ उठाएं।

क्र.सं.	वार्ताकार का नाम व विभाग	वार्ता का विषय	प्रसारणतिथि
1	**डॉ. प्रवीण बिश्नोई** **9982361529** विभागाध्यक्ष, पशु शल्य चिकित्सा एवं विकिरण, सी.वी.ए.एस., बीकानेर	बछड़ा एवं बछड़ी में पाये जाने वाले सामान्य रोग एवं उनकी रोकथाम	06.04.2017
2	**डॉ. मनीषा मेहरा** **7615003830** पशु व्याधि विभाग, सी.वी.ए.एस., बीकानेर	पशुओं में होने वाले प्रमुख टीकाकरण	13.04.2017
3	**डॉ. विजय बिश्नोई** **9828122277** पशु उत्पादन एवं प्रबंधन विभाग, सी.वी.ए.एस., बीकानेर	जैविक पशुपालन के लाभ	20.04.2017
4			27.04.2017

मुस्कान !

संपादक
प्रो. आर. के. धूड़िया
सह संपादक
प्रो. ए. के. कटारिया
प्रो. उर्मिला पानू
दिनेश चन्द्र सक्सेना
संयुक्त निदेशक (जनसम्पर्क) से.नि.
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने है।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवामें

.....

.....

.....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. आर. के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन विजय भवन पैलेस राजुवास बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. आर. के. धूड़िया

i'kfpfdRlk o i'kfoKku dh tkudkjh ikIr dju d fy, jktokl d Vky Ýh uEcj ij lEid djA

1800 180 6224